

डॉ. गैरी मीडर्स, ईश्वर की इच्छा जानना, सत्र 8बी, मूल्य, भाग 2

© 2024 गैरी मीडर्स और टेड हिल्डेब्रांट

आपका फिर से स्वागत है। हम पाठ GM8 में हैं। और हमें 8 को खंड A और खंड B में विभाजित करना है। यह आपकी विषय-सूची में दर्शाया गया है।

लेकिन जब मैं इसमें शामिल हुआ, तो मुझे एहसास हुआ कि मैं समय से बहुत आगे निकल चुका हूँ। इसलिए, मुझे इसे विभाजित करना पड़ा। मैं इस मुद्दे को कम नहीं करना चाहता।

ठीक है। आपके GM8 की स्लाइड 1 से 18 में, आप देखेंगे कि हमने मूल्यों के बारे में बहुत सी बातें की हैं। और हमने निष्कर्ष निकाला है कि जिस स्लाइड को आप अभी देख रहे हैं, स्लाइड 18 में आत्मा के फल और 2 पतरस के प्रेम के चक्र को देखते हुए।

हम निर्णय लेने में प्रेम को एक प्रमुख घटक के रूप में देखते रहे हैं। और शास्त्र आपको सद्गुणों और दोषों की सूची देते हैं, इत्यादि, ताकि आप इसे समझ सकें। इसके लिए आपको इस बारे में बहुत सोचना होगा कि इस तरह से जीने का क्या मतलब है।

और यह परमेश्वर की इच्छा जानने का एक हिस्सा है। अब, आइए इस व्याख्यान में स्लाइड 19 पर चलते हैं, जो मूल्यों के स्तरों से संबंधित है। यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है जिसके बारे में मुझे आपसे थोड़ा सा बात करनी है।

मूल्यों के स्तर। ठीक है। बाइबिल के आदेश।

यह बिल्कुल स्पष्ट है। बाइबिल हमारा विश्वदृष्टिकोण है, लेकिन बाइबिल के भीतर हमें आदेश मिलते हैं। वे मूल्यों के मूल पहलू हैं।

वही करो जो परमेश्वर कहता है। अब, बाइबिल की व्याख्या में, आपको इस बात से निपटना होगा कि उस आदेश का क्या अर्थ है, खासकर यदि आप पुराने नियम में किसी ऐसी चीज़ से निपट रहे हैं जो शायद उस समय हुई चीज़ों का वर्णन करती है। लेकिन पुराने नियम में बहुत सी मानक शिक्षाएँ हैं, और आपको उन पर काम करना होगा।

तो, आपके पास बाइबिल के कमांड मूल्य हैं। आपके पास सामुदायिक मूल्य हैं। हम उनके बारे में बात करने जा रहे हैं, और उनकी एक अलग परिभाषा है।

आपकी व्यक्तिगत प्राथमिकताएँ हैं, जो आपके मूल्य हैं। अब, हम यह भी देखेंगे कि वे कैसे काम करते हैं - इस समय आपके मूल्यों का स्तर निर्धारित करते हैं।

यह बहुत हद तक वैसा ही है, जैसे कि आप यह निर्धारित करने की कोशिश कर रहे हैं कि बाइबल प्रत्यक्ष, निहित या निर्मित रचना है, या कभी-कभी आप इसे यहाँ भी लाते हैं। आप स्तर

निर्धारित करते हैं, और यह इस बात पर निर्भर करता है कि व्यक्ति को शास्त्र क्या और कैसे सिखाता है, के बीच की बारीक रेखाओं की समझ है। तो, हम बाइबल द्वारा सिखाए जाने वाले तीन तरीकों पर वापस आ गए हैं, और यह मूल्यों को भी विभाजित करेगा।

प्रत्यक्ष शिक्षा होती है, शायद अनिवार्यताएं होती हैं, और निहित शिक्षाएं होती हैं, और समुदाय उन निहित शिक्षाओं को एक या दूसरे तरीके से ले सकता है, और व्यक्तिगत प्राथमिकताएं भी होती हैं जो आपके समुदाय विकसित करेंगे। इसलिए, आपको अपने मूल्यों के बारे में जागरूकता होनी चाहिए और वे विभिन्न श्रेणियों में कैसे विभाजित होते हैं, इसके संबंध में वे कहां फिट होते हैं। मैं थोड़ा सा समायोजन करता हूं क्योंकि मुझे पता है कि आप मुझे नहीं देखना चाहते हैं, लेकिन मैं आपको देखना चाहता हूं, ठीक है? यह रूपकात्मक रूप से बोल रहा हूँ।

ठीक है, अब, मूल्यों के स्तर। आइए बाइबिल के आदेशों के बारे में बात करते हैं। खैर, बाइबिल में स्पष्ट और प्रत्यक्ष शिक्षा है, और फिर भी हमें इस तरह की व्याख्या करनी होगी, जैसे कि, तुम हत्या नहीं करोगे।

दस आज्ञाओं का भी निर्देशात्मक महत्व है। सब्त के दिन दी गई आज्ञा का भी निर्देशात्मक महत्व है, लेकिन इसे किसी राष्ट्र, नागरिक परिस्थिति, चर्च में किसी न किसी तरह से समायोजित किया जाना चाहिए, और लोग इसे अलग-अलग तरीके से करते हैं। लेकिन बाइबल में दी गई आज्ञाएँ हैं, और फिर भी, तू हत्या नहीं करेगा, यह एक आसान आज्ञा नहीं है।

क्या इसका मतलब यह है कि युद्ध नहीं हो सकता? क्या इसका मतलब यह है कि अगर कोई आपके घर में घुसकर आपके परिवार को मारने वाला है तो आप आत्मरक्षा नहीं कर सकते? और ईसाई भी उनका अलग-अलग तरीके से जवाब देंगे। तो, आपके पास सीधे आदेश हैं, और सीधे आदेशों के लिए भी यह आवश्यक है कि हम उससे निपटने के लिए पवित्रशास्त्र और व्याख्या के इतिहास की जांच करें। हमने पहचाना कि मानक शिक्षण के लिए व्याख्या की आवश्यकता होती है, जो अक्सर धार्मिक प्रणालियों की रचनात्मक संरचनाओं द्वारा संचालित होती है।

और इसलिए, जब आप बाइबल का उपयोग कर रहे होते हैं, तो प्रत्यक्ष, लागू और रचनात्मक निर्माणों को पढ़ाने के निर्देशात्मक और वर्णनात्मक स्तर हमेशा काम करते हैं। यह एक बहुत ही हेरफेर करने वाला क्षेत्र बन सकता है क्योंकि लोग दावा कर सकते हैं कि वे जो कहते हैं कि आपको करना चाहिए वह एक बाइबिल आदेश है जबकि ऐसा बिल्कुल भी नहीं हो सकता है। इसलिए, हमें अपने विचारों को पाठ से जोड़ना होगा और उन्हें बाहर बहने और बाहर देवता बनने और अपना छोटा सा जीवन जीने की अनुमति नहीं देनी चाहिए।

इसलिए, मानक शिक्षा स्वयं एक बाइबिल आदेश होगी, लेकिन हमें इसे स्थापित करना होगा। अगर हमें कोई ऐसा आदेश मिलता है जिस पर कोई समझौता नहीं किया जा सकता है, यानी यह स्पष्ट है, यह हमेशा के लिए है, और इस पर ज़्यादा बहस नहीं होती है, यहाँ तक कि चर्च में भी, तो यह एक गैर-समझौता आदेश है। यह एक गैर-समझौता मूल्य है।

मुझे लगता है कि मेरा निहितार्थ, तुम हत्या नहीं करोगे, मानव जीवन का एक गैर-परक्राम्य मूल्य है, और फिर भी यह वह नहीं है जिसके बारे में आदेश आवश्यक रूप से है। लेकिन यह मानव जीवन के मूल्य को दर्शाता है। तो, आप देख सकते हैं कि ये चीजें बहुत अधिक परस्पर क्रिया करती हैं, और एक मॉडल जो मैंने आपको पहले ही सिखाया है, उसे आपके द्वारा पहचाने जा रहे और लागू किए जा रहे विभिन्न मूल्यों के अध्ययन में लाया जाना चाहिए।

ठीक है, यहाँ फिर से, जैसा कि मैंने अभी उल्लेख किया है, हमें बाइबल की शिक्षाओं के तीन स्तरों की समीक्षा करनी होगी। शिक्षण का उद्देश्य प्रत्यक्ष है, यह निहितार्थपूर्ण शिक्षण और रचनात्मक निर्माण है। हमें हमेशा यह जानने की आवश्यकता है कि जब हम बाइबल का दावा कर रहे हैं तो हम इस पिरामिड पर कहाँ हैं, और फिर यह मूल्य स्पष्टीकरण में भी आता है।

ठीक है, चलिए मूल्यों के बारे में बात करते हैं, सामुदायिक मूल्यों के बारे में। सामुदायिक मूल्य, चर्च, यह एक चर्च होगा, आपके चर्च के संविधान में हो सकता है, और इसका एक नया आयाम है। यह अलिखित हो सकता है।

उदाहरण के लिए, मैं एक चर्च का पादरी था, और चर्च के बड़े लोगों को लगा कि यह अच्छा विचार नहीं है। वास्तव में, उन्हें शायद यह भी लगा होगा कि रविवार को चर्च पिकनिक मनाना पाप है। आपको रविवार को बेसबॉल नहीं खेलना चाहिए।

आपको ऐसा या वैसा नहीं करना चाहिए। रविवार आराम का दिन है, और मैंने उनसे इस बारे में बात की, और मैंने कहा, देखो, एक वकील जो पूरे सप्ताह तनाव में रहता है, गेंद का खेल खेलता है और शारीरिक रूप से पूरी तरह थक जाता है, उसके लिए खुद को मुक्त करने के लिए सबसे अच्छा आराम हो सकता है। देखिए, इस सवाल पर बहुत सारे अलग-अलग दृष्टिकोण हैं।

सांस्कृतिक रूप से, पारंपरिक रूप से चीजों के बारे में प्राप्त मूल्य। बेशक, अलग-अलग समुदायों के बीच सब्बाथ एक बड़ा दिन है, और यह इस बात पर निर्भर करता है कि आपको इसे कैसे मानना चाहिए। वहाँ सभी प्रकार के दृष्टांत हैं, लेकिन यह बाइबल से जुड़ा हुआ है, भले ही यह अभी भी एक पारंपरिक चीज़ है।

धार्मिक और सामाजिक प्रणालियों के माध्यम से, आपको निहित शिक्षण और रचनात्मक निर्माण मिलते हैं जो खेल में आते हैं। तो, सामुदायिक मूल्य। जब आप किसी चर्च में अपने संविधान, नियमों और विनियमों, मूल रूप से वे क्या हैं, जो उस चर्च में सदस्यता का मार्गदर्शन करते हैं, से निपटते हैं, तो आपको खुद से ये सवाल पूछने होंगे।

क्या यह बाइबल की प्रत्यक्ष शिक्षा है? क्या यह एक निहित शिक्षा है, या यह एक रचनात्मक रचना है? क्या यह एक सामुदायिक मूल्य बन गया है जिसकी बाइबल मांग नहीं करती है, लेकिन हमें लगता है कि यह एक ईसाई के जीने के तरीके को सबसे बेहतर तरीके से दर्शाता है? बस इसे समझने से बहुत सारे चर्चों को मदद मिलेगी क्योंकि ज्यादातर लोग अपने विश्वासों और अपनी समझ को ईश्वर मानते हैं, बिना यह समझे कि जिस पाठ का वे हवाला दे रहे हैं, उसका क्या

मतलब है। ठीक है, संबंधपरक आयाम। रोमियों 12 से 14, 1 कुरिन्थियों 8 से 10 में, हमारे पास कमज़ोर भाई और मज़बूत भाई हैं।

मैं यहाँ इन ग्रंथों के बारे में नहीं बताने जा रहा हूँ। मैंने बाइबिल ई-लर्निंग साइट पर 1 कुरिन्थियों पर अपने पाठ्यक्रम में इनके बारे में कुछ बात की है। मैं यहाँ इनके बारे में नहीं बताने जा रहा हूँ, लेकिन वे निश्चित रूप से आपके सामने यह तथ्य प्रस्तुत करते हैं कि आप जो ठीक है वह कर सकते हैं और फिर भी किसी को अपमानित कर सकते हैं और समुदाय में इससे निपटना होगा।

आप लोगों को इतनी जल्दी नहीं धकेल सकते कि वे एक खास तरीके से दुनिया से चर्च में चले जाएं। हमें हमेशा उनकी परिपक्वता के प्रति संवेदनशील होना चाहिए। अब, अगर वे परिपक्व होने से इनकार करते हैं, तो जहां तक मेरा सवाल है, वे कमज़ोर ईसाई नहीं रह जाते हैं, और वे उग्र ईसाई बन जाते हैं, और इसके लिए अलग-अलग नियम हैं।

लेकिन सच्चाई यह है कि यह एक बहुत ही संवेदनशील क्षेत्र है और आपको अपने सामुदायिक मूल्यों के बारे में सोचना चाहिए और उन्हें कैसे तैयार करना चाहिए। सामुदायिक मूल्यों पर अक्सर बहस होती है। मैं एक चर्च में रहा हूँ, जहाँ सामुदायिक मूल्य हैं जिन्हें मैं मानता हूँ लेकिन उनसे सहमत नहीं हूँ क्योंकि वे बाइबल के मूल्य नहीं हैं, बल्कि वे सामुदायिक मूल्य हैं।

मैंने वहाँ जाना चुना, इसलिए मैंने उससे सहमत होने और उसके साथ चलने का फैसला किया। अगर मैं इसके साथ नहीं चल सकता, तो मैं कोई दूसरा चर्च ढूँढ लूँगा क्योंकि मैं उस संबंध में उस संविधान का उल्लंघन नहीं कर सकता। इसलिए उन पर अक्सर बहस होती है, लेकिन वे सदस्यता के समझौते से बाध्यकारी हैं।

लेकिन मैं यह बात बिलकुल स्पष्ट कर दूँ। वे कर्तव्य-सिद्धांतवादी नहीं हैं। अब, यह एक बड़ा शब्द है।

वे अनिवार्य नहीं हैं, लेकिन वे परिणाम हो सकते हैं जिन्हें चर्च विकसित करना चाहता है। इसलिए वे परिणामकारी हैं। इसलिए सामुदायिक मूल्य महत्वपूर्ण हैं, और वे व्यवस्था का एक हिस्सा हैं, वे ईसाई जीवन का एक हिस्सा हैं, और फिर भी उनके पास बाइबिल के मूल्यों के समान अधिकार नहीं है जो स्वभाव से कर्तव्यनिष्ठ हैं और बाध्यकारी के रूप में सहमत हैं।

वे सभी के लिए अनिवार्य रूप से मानक नहीं हैं। वे बातचीत योग्य हैं। और मैं कहता हूँ, जब आप एक चर्च का संविधान लिखते हैं, और आप उस चर्च और उसके व्यवहार के लिए ईश्वर की इच्छा तय करते हैं, तो आपको इसे ध्यान में रखना चाहिए और यह स्पष्ट करना चाहिए कि ये चर्च के मूल्य हैं; वे सामुदायिक मूल्य हैं जो हमें लगता है कि सबसे अच्छे तरीके से काम करते हैं।

वे बातचीत योग्य हैं, और वे सीधे मूल्यों की शिक्षा नहीं देते हैं। देखिए, अगर आप अपने संविधान और चीजों को इस तरीके से तैयार करते हैं, तो आप लोगों के साथ बहुत सी बहस से बच जाएंगे। और आप बेहतर स्थिति में होंगे।

ठीक है, व्यक्तिगत प्राथमिकताएँ हैं। तो, हमारे पास बाइबिल के आदेश और मूल्य हैं, हमारे पास सामुदायिक मूल्य हैं, और अब हमारे पास व्यक्तिगत मूल्य हैं। मैं उन्हें व्यक्तिगत प्राथमिकताएँ कहता हूँ।

वे मूल्य हैं। कभी-कभी, उन्हें देवता मान लिया जाता है, और वे लोगों के लिए बहुत महत्वपूर्ण मूल्य बन जाते हैं। मेरे विश्वास कई तरह से संगठित हैं।

और समय के साथ मेरी मान्यताएँ बदलती रहती हैं। उन्हें बदलना चाहिए क्योंकि मैं बड़ा हो रहा हूँ। मैं चीज़ों को पहले से बेहतर समझता हूँ।

और कुछ चीज़ें जो मुझे परेशान करती थीं, अब मुझे परेशान नहीं करतीं, और यह ठीक है क्योंकि यह सही है। कुछ चीज़ें हैं जो मुझे परेशान नहीं करती थीं, लेकिन अब मुझे परेशान करती हैं। इसलिए, हम लगातार अपनी व्यक्तिगत प्राथमिकताओं के इस प्रवाह में रहते हैं, और हमें उन्हें पहचानना होगा।

आपको यह जानना होगा कि बाइबल क्या है, आपको यह जानना होगा कि समुदाय क्या है और क्यों है, और आपको यह जानना होगा कि व्यक्तिगत क्या है। और आपको अपने व्यक्तिगत विश्वासों को किसी दूसरे व्यक्ति पर बहुत अधिक चर्चा किए बिना नहीं थोपना चाहिए, यदि कभी हो भी। मुझे आत्म-आलोचनात्मक जागरूकता होनी चाहिए कि मेरे विश्वास बाइबल के आदेश नहीं हैं।

वाह। आप जानते हैं, हम भगवान का शुक्रिया अदा कर सकते हैं कि चर्च अब उतने बुरे नहीं रहे जितने पहले हुआ करते थे। जब मैं 60 के दशक में एक नए ईसाई के रूप में बड़ा हो रहा था, तो ज्यादातर जगहों पर इन व्यक्तिगत प्राथमिकताओं को देवता की तरह माना जाता था।

और कुछ पागलपन भरी बातें थीं जो मुझे ईश्वर को समझने और ईश्वर की अपेक्षाओं को समझने की गलत दिशा में धकेल रही थीं। कुछ लोग कहते हैं, ठीक है, चर्च पीछे हट गया क्योंकि यह बदल गया। नहीं, चर्च आखिरकार वास्तविकता से निपट गया और बड़ा हो गया और सांस्कृतिक होना छोड़ दिया।

इसलिए, यह ऐसी चीज़ है जिस पर हर चर्च, समुदाय और व्यक्ति को काम करना होगा। और अगर आपकी कोई व्यक्तिगत पसंद है जो आपके लिए एक दृढ़ विश्वास है, और फिर भी ज्यादातर दूसरे लोगों के पास यह नहीं है, तो यह ठीक है। उन्हें आपके प्रति दयालु होना चाहिए, और आपको उनके प्रति दयालु होना चाहिए।

आप अपने विश्वास को थोपते नहीं हैं, और आप उसे जीते हैं। वे आपको इसका उल्लंघन करने के लिए मजबूर नहीं करते हैं। और यह व्यक्तिगत विश्वासों और व्यक्तिगत मूल्यों के साथ एक समुदाय में रहने का हिस्सा है।

वास्तव में, मैं यह बदलाव इसलिए करना चाहता हूँ ताकि हम यह न भूलें कि प्राथमिकताएँ मूल्य हैं। इसलिए, मेरा मानना है कि मुझे आत्म-त्याग के इस मुद्दे से संबंधित होना चाहिए जो उचित हो

सकता है। मेरे लिए यह उचित हो सकता है कि मैं जो जानता हूँ उसे किसी ऐसे व्यक्ति के लिए दबा दूँ जो सीखने की प्रक्रिया में है।

और यही बात रोमियों और कुरिन्थियों में भी कही गई है, मुझे लगता है, कुछ हद तक। आत्म-त्याग उचित हो सकता है। यह ज़रूरी नहीं है, लेकिन यह उचित हो सकता है।

यह जानबूझ कर किया जाता है, न कि हेरफेर करके। यार, पादरी के लिए यह एक बड़ी बात है। आप लोगों को उचित तरीके से कुछ कैसे सिखा सकते हैं जो आप नहीं करने जा रहे हैं, लेकिन आप उन्हें ऐसा न करने के लिए हेरफेर नहीं करते क्योंकि ऐसा करना ठीक है? खैर, पादरी को हेरफेर करना होता है, हेरफेर नहीं, माफ कीजिए, चालाकी।

मुझे लोगों के साथ बहुत सी चीज़ों को लेकर तालमेल बिठाना पड़ता है। व्यक्तिगत पसंद हमेशा बातचीत योग्य होती है। उनके बारे में बात की जानी चाहिए, और उनकी जांच की जानी चाहिए।

लेकिन अगर कोई व्यक्ति अपनी निजी पसंद से दूर नहीं जा पा रहा है, जिसका आपको लगता है कि बाइबल से कोई लेना-देना नहीं है, तो कोई बात नहीं। उन्हें अकेला छोड़ दें। उन्हें अपनी निजी पसंद रखने दें, फिर भी उनसे प्यार करें और उन्हें बहिष्कृत न करें या उन्हें बुरा महसूस न कराएँ।

सच कहूँ तो, आप उन्हें यह नहीं बताते कि नहीं, आप वाकई मूर्ख हैं। आपको इसमें यह प्राथमिकता है। मैं बाइबल पढ़ सकता हूँ।

नहीं, उन्हें यह किसी कारण से मिला है। कारण जानने की कोशिश करें। उनकी पृष्ठभूमि में क्या है? उनकी परवरिश में क्या है? यह उनके लिए इतना कीमती है कि आप इसे समझ भी नहीं पाते।

इस तरह आप समुदाय में व्यक्तिगत प्राथमिकताओं पर काम करते हैं। ठीक है। अब, यह हमें इस पर वापस लाता है, जिसे हमने कई बार देखा है, और मुझे यकीन है कि आप इसे देखकर पूरी तरह से थक गए हैं।

धीरज रखो। ठीक है। विश्वदृष्टिकोण और मूल्य सेट को व्यवस्थित करो।

यहाँ बहुत सारे मुद्दे हैं। उनमें से कुछ में सीधे बाइबल की शिक्षा है। उनमें से कुछ में निहित बाइबल की शिक्षा है।

कभी-कभी, उनमें से कुछ सीधे तौर पर व्यापक खुली चीज़ों के निहितार्थों को संबोधित नहीं करते हैं। एक और बात है आपके बच्चों की शिक्षा। बाइबल आपको यह नहीं बताती कि ऐसा कैसे किया जाए।

अब, आप निश्चित रूप से शिक्षा के बारे में कुछ निहितार्थपूर्ण सिद्धांत पा सकते हैं, लेकिन तथ्य यह है कि, दिन के अंत में, आप अपने बच्चों को कैसे शिक्षित करते हैं, घर, निजी, चार्टर या सार्वजनिक, हमेशा ऐतिहासिक और भौगोलिक संदर्भ का मामला होता है। यह कुछ ऐसा है जो

व्यक्तिगत वरीयता क्षेत्र में होगा। इसलिए, जब आप अपने मूल्यों को व्यवस्थित करते हैं, तो आपको यह जानना होगा कि वे मूल्यों के किस क्षेत्र में हैं।

क्या वे बाइबिल के मूल्य हैं? क्या वे सामुदायिक मूल्य हैं? क्या वे व्यक्तिगत प्राथमिकताएँ हैं? यह अत्यंत महत्वपूर्ण है। शायद यही बात ज़्यादातर लोगों को सबसे ज़्यादा पसंद आती है, और मैंने देखा कि यह स्लाइड उस तरफ़ थोड़ी ज़्यादा है। मुझे स्लाइड को एडजस्ट करना पड़ सकता है।

लेकिन सामाजिक रूप से शराब पीने, चर्च में शराब पीने का मुद्दा, यह एक ऐसा मुद्दा है जो मेरे 50, 60 सालों के ईसाई होने और सख्त से खुले, खुले से सख्त तक के इस बदलाव को देखने के दौरान वास्तव में व्यक्तिगत मूल्यों के दायरे में आता है। क्योंकि आप बाइबल का उपयोग यह सिखाने के लिए नहीं कर सकते कि शराबबंदी ईश्वर का तरीका है। अगर आप बाइबल को ध्यान से पढ़ेंगे तो यह काम नहीं करेगा।

बुजुर्गों की देखभाल, मुकदमे, चर्च की गरीबी, बहुत सी चीज़ें। उदाहरण के लिए, 1 कुरिन्थियों का मुकदमों के खिलाफ़ अमेरिका में मुकदमे नहीं हैं। यह रोमन संस्कृति में मुकदमों के खिलाफ़ है जहाँ उनके पास परेशान करने वाले मुकदमे और मुकदमे थे।

यह एक और संपूर्ण पाठ है जिसे आप मेरे कुरिन्थियों में देख सकते हैं। तो, इन सवालों के आपके जवाब न केवल आपके विश्वदृष्टिकोण से बल्कि आपके मूल्यों से भी निर्धारित होते हैं। इसलिए, विश्वदृष्टिकोण और मूल्य लगातार काम कर रहे हैं और आपके जीवन में ध्यान आकर्षित करने की होड़ में हैं।

अब, मैं इस पर फिर से समीक्षा नहीं करने जा रहा हूँ। मैंने आपसे इसके बारे में पहले भी बात की है। मैंने आपसे उत्पत्ति की कथा और 2 पतरस के बारे में बात की है, लेकिन आप लूत को देख सकते हैं।

अब्राहम और लूत आपको मूल्यों के बारे में बहुत कुछ बताते हैं, ठीक है? हम फिर से रूपांतरित मन पर वापस आते हैं। यह क्या है? खैर, विश्वदृष्टि की तरह मूल्यों के संबंध में, यह शिक्षा की एक प्रक्रिया है जो हमारे विश्वदृष्टि और मूल्यों को बाइबिल की शिक्षा के अनुरूप लाती है। मैं यह भी जोड़ सकता हूँ कि यह उन्हें बाइबिल की शिक्षा के अनुरूप और ध्यान में लाता है।

आप इसमें कुछ और जोड़ सकते हैं। यह अच्छा होगा। परिवर्तित मन निर्णय लेने की प्रक्रिया की ओर ले जाता है जो कि जीवन के रोजमर्रा के संघर्ष में हमारे विश्वदृष्टिकोण और मूल्य प्रणाली की सचेत भागीदारी है।

क्या आप इस बात को समझने लगे हैं? परमेश्वर की इच्छा जानने का मतलब सिर्फ़ प्रार्थना करना और परमेश्वर से यह पूछना नहीं है कि वह आपको क्या बताए। और सच कहूँ तो यह इसका हिस्सा भी नहीं है। बल्कि यह जीवन के उन मुद्दों के साथ शास्त्र की शिक्षा पर बातचीत करना है जिनका आप सामना करते हैं।

मुझे लगता है कि विश्वदृष्टि और मूल्य प्रणाली आपको इसे हासिल करने में मदद करेगी। और मैं आपको बस शुरुआत बता रहा हूँ। यह एक बहुत बड़ा क्षेत्र है।

आध्यात्मिक सुविधा से यह संभव नहीं है क्योंकि उस क्षेत्र के लिए बहुत कुछ अपरिभाषित और अस्पष्ट है। मुझे परवाह नहीं है कि आपके पास कितने चार्ट हैं। यह बस काम नहीं करने वाला है।

ठीक है। बाइबिल मॉडल में उभरने वाले घटक। सबसे पहले, मूल्यों के बाइबिल मॉडल में, हमें परमेश्वर की छवि को प्रतिबिंबित करना चाहिए।

हमें उनके प्रतिनिधि बनना है। आप अपने या भगवान के प्रतिनिधि बनकर किसी को बिना किसी अच्छे कारण के गोली नहीं मार सकते। या ऐसा नहीं कर सकते।

मेरा मतलब है, आप लगभग कोई भी स्पष्टीकरण दे सकते हैं। उदाहरण के लिए, 1 तीमुथियुस 3 में पादरी के लिए मूल्यों की सूची ज़्यादातर व्यक्तिगत मूल्य हैं। वे बाइबिल के मूल्य हैं।

वे व्यक्तिगत मूल्य हैं। धमकाने वाला मत बनो, जो उस सूची का हिस्सा है। यह वह शब्द नहीं है जिसका इस्तेमाल ज़्यादातर अनुवादों में किया जाता है, लेकिन यह इसी बारे में बात कर रहा है।

आप धमकाने वाले बनकर भगवान की छवि को प्रतिबिंबित नहीं कर सकते। भगवान धमकाने वाले नहीं हैं। पुराने नियम के एक विद्वान ने कहा कि भगवान पुराने नियम के गंदे धमकाने वाले थे।

खैर, उसे किसी दिन इसका जवाब देना ही पड़ेगा। अब, भगवान तो भगवान है। वह कोई बदमाश नहीं है।

चर्च में बहुत से बदमाश हैं। जीवन में बहुत से बदमाश हैं, और जब आप बदमाश होते हैं तो आप परमेश्वर की छवि को नहीं दर्शाते हैं। और इसलिए, हमारे बाइबिल मॉडल को इस बात पर विचार करना चाहिए कि हम परमेश्वर को कैसे दर्शाते हैं क्योंकि हम उनके प्रतिनिधि हैं।

उत्पत्ति 3 में वर्णित पतन जीवन के सभी पहलुओं को प्रभावित करता है, चाहे वह शारीरिक हो या मानसिक। मैंने यह कहा है, और मैं इसे फिर से कहता हूँ। रोमियों 12 में सोच के एक परिवर्तित तरीके की मांग की गई है।

विवेक एक तर्कसंगत प्रक्रिया है। यह कोई भावनात्मक प्रक्रिया नहीं है। यह आपके दिमाग से निकली हुई प्रक्रिया नहीं है।

यह आपकी वर्तमान संस्कृति में बाइबल के अनुसार कार्यों के बारे में निरंतर सोचने की एक प्रक्रिया है। बाइबल की व्याख्या उसकी शर्तों के अनुसार की जानी चाहिए। आपको विवरण जानना होगा।

आपको नुस्खा जानना होगा। आपको पूछना होगा कि मानक क्या है। आपको पूछना होगा कि मूल श्रोताओं के लिए इसका क्या मतलब था ताकि मुझे इस बारे में कुछ सुराग मिल सके कि मेरे लिए इसका क्या मतलब है क्योंकि मैं इसे अपने संदर्भ में संदर्भित करता हूँ।

इसलिए, बाइबल की व्याख्या की जानी चाहिए। यह ईसाई जीवन के लिए कुर्सी पर बैठकर किया जाने वाला दृष्टिकोण नहीं है। विद्यार्थी बनिए।

जितना आप सीखने में सक्षम हैं, जितना आप सीख सकते हैं, सीखने की कोशिश करें। ऐसा करने के लिए आपको सप्ताह में कुछ समय निकालना होगा। यह समय सिर्फ 15 मिनट का हो सकता है।

यह एक घंटा हो सकता है। लेकिन मुझे लगता है कि अगर हम इस स्थिति का सामना करें तो हम इससे ज़्यादा समय निकाल सकते हैं। क्योंकि चर्च में एक व्यक्ति के रूप में, आप ऐसा करने के लिए ज़िम्मेदार हैं।

यहाँ पर भगवान जिम्मेदार होंगे। विद्यार्थी बनो। हम अपने स्वभाव के भीतर विवेक करने के लिए स्वतंत्र हैं।

स्वतंत्रता प्रकृति से, हमारे विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों से बंधी हुई है, जो जानबूझकर या अनजाने में खुद को अभिव्यक्त करती है। यदि आप अनजाने में विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों पर काम कर रहे हैं, तो आपकी स्वतंत्रता शायद गलत तरीके से प्रतिबंधित है। या हो सकता है कि आप प्रतिबंध न लगाने में गलत हों।

तो, आप देखिए, यह सब यहाँ एक साथ आता है। आज़ादी कभी भी वास्तव में मुफ्त नहीं होती। आज़ादी एक ऐसी चीज़ है जिसे आपको जीवन के संदर्भ में समझना होगा।

हमारा विश्वदृष्टिकोण ज्ञान प्रदान करता है, न कि इसका उल्टा। ज्ञान हमारे विश्वदृष्टिकोण से आता है। ज्ञान व्यावहारिकता नहीं है।

बुद्धिमानी भरा काम करें। हाँ, लेकिन आपको यह जानने के लिए बहुत कुछ सीखना होगा कि बुद्धिमानी वाला काम क्या है। यह वह नहीं है जो आप अपने दिमाग से सोचते हैं।

अब, कोई कह सकता है, अच्छा, हे भगवान, यह बहुत मुश्किल है। यह उससे भी आसान होना चाहिए। अच्छा, भगवान को बताइए।

मुझे मत बताओ। उसने हमें एक बहुत ही प्रभावशाली, चुनौतीपूर्ण शास्त्र दिया है जिसके लिए हमें जवाबदेह ठहराया जाएगा। और अब समय आ गया है कि हम इसे गंभीरता से लेना शुरू करें।

अब तक आपने जो सीखा है उसे लें और अपने संदर्भ से कुछ ऐसे प्रश्न लागू करें जो प्रत्यक्ष शिक्षण द्वारा संबोधित नहीं किए गए हैं और इसे उस चार्ट के माध्यम से चलाएँ जो मैंने आपको दिया है।

मैंने आपको यहाँ आपके नोट्स में अंतिम स्लाइड दी है। लेकिन आपको उस स्लाइड को लेना होगा और इसे अलग से प्रिंट करना होगा ताकि आप इसे देख सकें।

मुझे ऐसा करना है। आप स्लाइड को अलग से प्रिंट कर सकते हैं। एक अच्छा बड़ा पेज बनाइए।

और यह एक चार्ट है जो मैंने बनाया है। इसे एक बिज़नेस बुक में भी इस्तेमाल किया गया है। मुझे एक दिन एक पत्र मिला जिसमें मुझसे पूछा गया कि क्या मैं अपना चार्ट इस्तेमाल कर सकता हूँ क्योंकि उन्हें निर्णय लेने वाला सेटअप पसंद है।

उन्होंने इसे बस एक व्यावसायिक सेटअप में समायोजित कर दिया। और आप भी यही कर सकते हैं। आइए देखें कि यह कैसे आगे बढ़ता है।

मैं आपको दिखाता हूँ कि यह कैसे होता है। आपके पास एक निर्णय आता है। कोई भी निर्णय लेते समय आप सबसे पहला सवाल पूछते हैं कि क्या यह किसी स्पष्ट आदेश के अंतर्गत आता है। यदि आप तय करते हैं कि यह किसी स्पष्ट आदेश के अंतर्गत आता है, तो आप जीवन में जहाँ भी हों और बाइबल पढ़ने की आपकी क्षमता के अनुसार, आप तय करते हैं कि यह एक स्पष्ट आदेश है, और फिर आपका यह दायित्व है कि आप उस आदेश का पालन करें।

चर्चा यहीं समाप्त होती है। आसान है। आसान नहीं है, 10 साल बाद आप तय करते हैं कि यह उतना स्पष्ट नहीं था जितना मैंने सोचा था।

फिर आपको वापस आकर इसे फिर से करना होगा। इसलिए, यह कभी स्थिर नहीं रहता। खैर, क्या होगा अगर यह किसी स्पष्ट आदेश द्वारा कवर नहीं किया गया है? खैर, फिर, आपको स्पष्टीकरण के लिए अध्ययन करना होगा।

वहाँ, आप लागू रचनात्मक निर्माण स्तरों में प्रवेश करते हैं। जैसे-जैसे आप अपने विश्वदृष्टिकोण को समझते हैं, आप मूल्यों के स्तरों की प्रकृति में प्रवेश करते हैं। मैं यहाँ उल्लेख करता हूँ कि आपको स्पष्टीकरण के लिए अध्ययन करते समय रोमियों और प्रथम कुरिन्थियों पर विचार करना चाहिए।

मैं यहाँ और भी बहुत कुछ लिख सकता हूँ, लेकिन मेरे पास जगह नहीं है। आप बात समझ गए होंगे। निष्कर्ष।

अगर आपका निष्कर्ष हाँ है, तो यह ईश्वर की अपेक्षा है। हालाँकि शुरू में मुझे यह स्पष्ट नहीं लगा था, लेकिन अब मैं समझ गया हूँ कि यह एक अपेक्षा है। फिर आप वापस जाते हैं, और आप इसका पालन करते हैं।

यदि यह अपेक्षा नहीं है, तो आपको अभी भी और काम करना है। अपने बाइबिल के विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों के सेट के माध्यम से डेटा को प्रोसेस करें। यहाँ इस ब्लॉक को आप मेरे छोटे लोगों की छवियों पर अपने सिर में उस दिल के रूप में सोच सकते हैं जो मैं आपको विश्वदृष्टि मूल्यों और इसी तरह के बारे में देता हूँ।

यह ब्लॉक पवित्र नहीं है। यहाँ बहुत सारे मुद्दे हैं जो मैं आपके सामने लाने जा रहा हूँ, लेकिन इनमें से बहुत से मुद्दे शायद लागू न हों। आप दूसरे मुद्दों के बारे में सोच सकते हैं।

इसीलिए हमारे पास यहाँ पर सेटेरिस है। क्योंकि मुद्दे परमेश्वर की संप्रभुता और उसके वचन के प्रति समर्पण के दृष्टिकोण के साथ विवेकपूर्ण बुद्धि के ग्रिड से होकर गुजरेंगे। हमारा दृष्टिकोण क्या है? यह विवेकपूर्ण बुद्धि के लिए प्रार्थना के दृष्टिकोण के साथ किया जाता है।

और वैसे, यह कोई चमत्कार नहीं है। बुद्धि प्राप्त करने का मतलब है कि आप शास्त्रों में प्रवेश करें और अपना विश्वदृष्टिकोण सीखें। जेम्स वास्तव में यही कह रहा है।

और ईश्वर की संप्रभुता और ईश्वरीय कृपा के प्रति समर्पण का रवैया, आप इन्हें अपने मूल्यों और अपने विश्वदृष्टिकोण के माध्यम से काम करते हैं। ठीक है, आइए यहाँ उनमें से कुछ के बारे में सोचें। सबसे पहले, आप उन मूल्यों की पहचान करते हैं जो निर्णय को रेखांकित करते हैं।

आप इनकी तुलना अपने मूल्य मॉडल से करते हैं, और आप बाइबिल की शिक्षाओं की जांच करते हैं। उदाहरण के लिए, किसी भी निर्णय में सबसे पहली चीज़ आपकी आलोचनात्मक आत्म-जागरूकता है। यह निर्णय होना चाहिए, मैंने आपको अन्य मॉडल दिए हैं, और हम आपको और भी देंगे, जहाँ आप इसे लिख सकते हैं।

आप जो निर्णय लेने जा रहे हैं, उसे लिख लें। आपको स्पष्ट होना होगा। आपको खुद पर सख्त होना होगा और जितना संभव हो सके उतना स्पष्ट और स्पष्ट होना होगा।

हाँ, यह एक कार्य है। ठीक है, आप अपनी आलोचनात्मक आत्म-जागरूकता पर आते हैं। उस मुद्दे के बारे में आपको क्या लगता है कि आप पक्षपाती हैं? यह उसके लिए एक प्रश्न होगा।

क्या आप इस बारे में पक्षपाती हैं? खैर, आपको खुद को जानना होगा, देखिए। आपकी आलोचनात्मक आत्म-जागरूकता। यहाँ एक बहुत ही दिलचस्प बात है।

जीवन में आपका मानवीय स्थान। जब आप कोई निर्णय ले रहे हों, चाहे आप अविवाहित हों, चाहे आप विवाहित हों, चाहे आप विवाहित हों और आपके बच्चे हों, चाहे आप विवाहित हों और आपके बच्चे चले गए हों, चाहे आप विवाहित हों और आपके बच्चे हों और आपके माता-पिता आपके साथ रहने आए हों। हम बच्चों के वापस आने का स्वागत नहीं करेंगे।

मान लीजिए कि आपके माता-पिता आपके साथ रहने आए हैं। इनमें से हर एक श्रेणी में बाइबल के मूल्य हैं जो आपके निर्णयों को प्रभावित करते हैं, और आपको निर्णय लेने में इसके माध्यम से काम करना होगा। आप कहते हैं कि यह बहुत ज़्यादा काम है।

मैं बस यही चाहता हूँ कि भगवान मुझे बताएँ कि मुझे क्या करना है। ठीक है, अपनी भोली-भाली ज़िंदगी जियो। अपनी ज़िंदगी जियो, और फिर तुम भोलेपन से बाहर निकलो, जो तुम करना

चाहते हो करो, और अचानक, तुम्हें एहसास होता है, ओह, मैं समझ नहीं पाया कि भगवान क्या चाहते थे।

उसने मुझे गलत बताया। तुम यही कहना चाहते हो। तुममें हिम्मत नहीं है।

भगवान को दोष दो। तो, तुम खुद को दोष दो। मैंने पर्याप्त प्रार्थना नहीं की।

मैंने यह पर्याप्त नहीं किया। मैंने वह नहीं किया। इसे भूल जाओ।

आप गलत रास्ते पर चल रहे हैं। विश्वदृष्टि और मूल्यों का मूल्यांकन करें। और मानवीय दायित्वों की उन सभी श्रेणियों के लिए विश्वदृष्टि और मूल्य हैं।

परिस्थितिजन्य प्रावधान। मैंने जीवन में ऐसे निर्णय लिए हैं जो मैं नहीं लेना चाहता था, लेकिन मुझे लगा कि परिस्थितिजन्य प्रावधान के अनुसार, यह कुछ ऐसा था जो मुझे करना ही था। और यही जीवन है।

और कभी-कभी नकारात्मक परिस्थितियाँ होती हैं। कभी-कभी, वे सकारात्मक परिस्थितियाँ होती हैं। मैं बूढ़ा हो रहा हूँ।

मैं आपको यह नहीं बताने जा रहा कि मैं कितना बूढ़ा हूँ क्योंकि आपको लगता है कि मैं अपनी उम्र से छोटा हूँ। मैं इसे अपने पास रखूँगा। परिस्थितिजन्य नियति।

हमें इस बात को ध्यान में रखना होगा क्योंकि हम सिटी हॉल से नहीं लड़ सकते। भगवान ने हमें बनाया है, और हमारे जीवन में कुछ मुद्दे हैं। यह स्वास्थ्य हो सकता है।

पैराप्लोजिक के लिए यह कहना अच्छा विचार नहीं होगा कि मैं जापान में मिशनरी बनना चाहता हूँ। या मैं चीन में मिशनरी बनना चाहता हूँ। खैर, परिस्थितिजन्य प्रावधान है जिसे इसमें कारक होना चाहिए।

और आप जा सकते हैं, शायद आप जा सकते हैं, और शायद यह बहुत बढ़िया होगा। आप जोड़ी की तरह होंगे, जिसने एक बुरी स्थिति से अपना जीवन बनाया। लेकिन आपको इस मामले में बहुत सावधान रहना होगा।

राय और अपने मौजूदा मुद्दे पर शोध करें। आपको धर्मग्रंथों पर शोध करना होगा, दुनिया पर शोध करना होगा, और आप जो कर रहे हैं उसके बारे में राय जाननी होगी। आपको एक तार्किक परंपरा और समझ दिखाई देगी।

जब आप इस निर्णय पर पहुँच रहे हैं तो बैपटिस्ट या प्रेस्बिटेरियन या एंग्लिकन या जो भी हो, उसका क्या मतलब है? तो, आप देखिए, ये चीज़ें आपकी प्रक्रिया, आपकी भूमिका और ईश्वर के राज्य में आपके व्यक्तिगत दायित्व का हिस्सा हैं। मैंने कुछ बहुत अच्छे चर्चों को ठुकरा दिया है। कुछ बड़े चर्चों को।

मैं ज़्यादा पैसे कमा सकता था। मुझे ज़्यादा सम्मान मिल सकता था। हम इस पर चर्चा करेंगे।

शिक्षकों को कभी-कभी चर्च में ज़्यादा सम्मान नहीं मिलता। लोगों को हमारे सवाल और हमारी जाँच-पड़ताल पसंद नहीं आती। लेकिन परमेश्वर के राज्य में आपकी व्यक्तिगत ज़िम्मेदारियाँ हैं।

मैं और कुछ नहीं कर सकता। मुझे पढ़ाना है। असल में, मुझे अपनी पत्नी से परेशानी होगी क्योंकि मैं उसे पढ़ाने की कोशिश करता हूँ।

यह अच्छा विचार नहीं है। सज्जनों, अपनी पत्नी को सिखाने के तरीके पर ध्यान दें। इस मामले में आप शिक्षक नहीं हैं।

आप नेता हो सकते हैं, लेकिन आपको सावधान रहना चाहिए। ठीक है? आपकी इच्छाएँ। भजन हमें बार-बार बताते हैं कि परमेश्वर हमें हमारे दिल और दिमाग की इच्छाएँ पूरी करेगा।

अब, आपको इस बारे में बहुत सोचना होगा। मैं एक ऐसा लेखक बनना चाहता हूँ जिसने सौ किताबें लिखी हों। खैर, इसे भूल जाइए।

मैं जानता हूँ कि किताब लिखना कैसा होता है। और मैंने सबसे चुनौतीपूर्ण किस्म की किताबें नहीं लिखी हैं। और मैंने जितना लिखा है, उससे कहीं ज़्यादा पढ़ाया है।

मैं एक ऐसे जीवन में जी रहा था जहाँ मुझे बदलते पाठ्यक्रम के कारण हर समय नए पाठ्यक्रम बनाने पड़ते थे। इसलिए, मेरे पास सभी प्रकार की दैवीय परिस्थितियाँ हैं जो मुझे मेरी इच्छाओं से दूर रखती हैं। मैं और अधिक वीडियो बनाना चाहता हूँ।

और जैसा कि मैं एल्डर ब्रेट से कहता था, मुझे कुछ करने का मौका मिल रहा है, और उम्मीद है कि इससे भी ज़्यादा। लेकिन यह सवाल पूछने की बात है कि इस स्थिति में भगवान की क्या इच्छा है? फ्रांस में सूचित लोगों की परिषद। इसे वहीं ठीक करने की ज़रूरत है।

फ्रांस में काउंसिल ऑफ़ इंफॉर्मर्ड पीपल के चार्ट में यह बात गलत साबित हुई। लोगों की बात सुनिए।

हममें से कितने लोगों ने कभी अपने माता-पिता की बात सुनी है? अच्छी तरह से सुनी। हममें से कितने लोगों ने उन लोगों की बात सुनी जिनका हम सम्मान करते थे? हमने सुना, लेकिन हमने नहीं सुना। अगर मैंने सुना होता, तो मैं कुछ मायनों में बेहतर होता।

मैं ऐसे विकल्प चुनता जो मैं चाहता था, लेकिन मैंने नहीं चुने क्योंकि मैंने उनकी बात नहीं सुनी। हम अच्छे श्रोता नहीं हैं। यह महत्वपूर्ण है कि हम उस समुदाय के विचारों और अनुमोदन से सीखें, जिसके लिए आप जवाब देते हैं।

आपको एहसास होता है कि पादरी बनने का चुनाव आप नहीं करते। टिमोथी के अनुसार, समुदाय तय करता है कि आपको पादरी बनना चाहिए या नहीं। आप कह सकते हैं, मैं ईश्वर को पादरी बनने के लिए बुला रहा हूँ।

यह बहुत बढ़िया है। ठीक है, बैठो। हम तुमसे बात करने जा रहे हैं।

हम आप पर नज़र रखेंगे। हम आपकी बात सुनेंगे। हम यह देखने के लिए आपका परीक्षण करेंगे कि आपको ऐसा करना चाहिए या नहीं।

और हम तय करेंगे। टिमोथी ने यही कहा है। अमेरिका में, आप बस अगले चर्च में चले जाते हैं और उन्हें बताते हैं कि आपको यही होना चाहिए।

बाइबल में, समुदाय यह तय करता है कि ये नेता उपयुक्त हैं या नहीं। और यह सिलसिला चलता रहता है। आप कहते हैं, अच्छा, यह बहुत जटिल है।

मैंने इसके लिए साइन अप नहीं किया। नहीं, आपने नहीं किया। लेकिन आपको यह मिल गया।

गैरी फ्राइसन ने अपनी वेबसाइट पर मेरी आलोचना की और कहा, मीटर का पालन करने के लिए आपको सेमिनरी प्रोफेसर होना चाहिए। खैर, आप जानते हैं, मैं इसे आलोचना के रूप में नहीं बल्कि प्रशंसा के रूप में देखूंगा। आपको ईश्वर के वचन को जितना संभव हो सके उतना बेहतर तरीके से जानने का प्रयास करना चाहिए।

और हम सभी एक अलग सातत्य पर रहते हैं। आपको सीखने का प्रयास करना चाहिए। आपको जानने का प्रयास करना चाहिए।

हर ईसाई को जीवन भर सीखने वाला होना चाहिए क्योंकि आप अपने विश्वदृष्टिकोण और अपने मॉडल और अपने मूल्यों को उस मॉडल के अनुसार समायोजित कर रहे हैं जिसके अनुसार आप जीना चाहते हैं। इसलिए आप पहचान करते हैं, और आप अपने विकल्पों और निर्णयों का मूल्यांकन करते हैं। यह हमेशा सिर्फ एक चीज़ नहीं होती।

हो सकता है कि आपके पास विकल्प मौजूद हों। स्वर्ग के इस तरफ़ बाइबल की व्याख्या में विकल्प मौजूद हैं। और आपके फ़ैसले में भी विकल्प मौजूद हो सकते हैं।

आपको यह पता लगाना होगा। आमतौर पर आप कोई निर्णय लेते हैं। आपने यह सब कुछ किया है।

आपको निर्णय लेना होगा। अन्यथा, आप वही होंगे जिसे मैं रोमियों 7 ईसाई, जल चक्र ईसाई कहता हूँ। आप रोमियों 7 को पढ़ते हैं, और यह बाइबिल में डूबी डूबी डू अध्याय है।

मैं जो करना चाहता हूँ, वह कर सकता हूँ। जो मैं नहीं करना चाहता, वह भी मैं कर देता हूँ। यह डूबी डूबी डू अध्याय है।

हालाँकि रोमियों 7 समाप्त होता है, और रोमियों 8 शुरू होता है। भगवान का शुक्र है कि मैं रोमियों 7 से बाहर निकल आया, जहाँ मैं बिना आगे बढ़े इस चक्र में था। और जो लोग निर्णय नहीं ले सकते, वे उन लोगों से भी बदतर हैं जो निर्णय लेते हैं और उन्हें पीछे हटना पड़ता है और एक अलग निर्णय लेना पड़ता है।

कभी-कभी आपको निर्णय लेना पड़ता है। कार्यवाही की योजना बनाएँ। समय-समय पर अपने निर्णय की समीक्षा करें।

निर्णय वस्तुतः कभी भी पत्थर की लकीर नहीं होते। लेकिन जैसे-जैसे आप जीवन में आगे बढ़ते हैं और ईश्वर आपको एक व्यक्ति के रूप में ढालता है, आपके निर्णय बदलते रहते हैं। अपने निर्णय में समायोजन करें या उसे जारी रखें।

तो यह चार्ट जटिल लगता है, लेकिन यह आपके दिमाग के काम करने का तरीका है। आपको बस खुद को शिक्षित करना है। आपको अपने विश्वदृष्टिकोण और मूल्य संरचना में, अपने परिवर्तित दिमाग में, यह लाना होगा कि ईश्वर की दुनिया में निर्णय लेने का क्या मतलब है।

अब बहुत सारे फैसले लेने हैं। मैं यह सब नहीं करने जा रहा हूँ। मुझे लगता है कि मुझे पूर्णकालिक विदेशी मिशनरी बनना चाहिए।

आप इसे हमारे चार्ट के माध्यम से देख सकते हैं। और इनमें से प्रत्येक श्रेणी, किसी न किसी अर्थ में, इसका उत्तर देगी। यह सिर्फ मेरी भावना नहीं है।

यह इस बात पर निर्भर करता है कि मैं अपने जीवन में ईश्वर के आह्वान को प्रदर्शित और मान्य कर सकता हूँ या नहीं। मुझे लगता है कि ईश्वर की इच्छा है कि मैं एक चिकित्सक बनूँ। खैर, यह एक महान और नेक बात है।

लेकिन अगर आप कॉलेज में फेल हो गए, तो शायद आप डॉक्टर नहीं बन पाएंगे। मैं और मेरा परिवार अपने चर्च में खुश नहीं हैं। क्या हमें कोई कदम उठाना चाहिए? खैर, शायद मैं आपकी नाखुशी को अपने साथ ले जाऊँ।

आप जानते हैं, यह वैसा ही है जैसा कि एक बार किसी ने कहा था, आपको कोई आदर्श चर्च नहीं मिलता। आपको ऐसा चर्च मिलता है जो आपकी खामियों को सहने के लिए तैयार हो। यह बहुत समझदारी वाली बात है।

यह सेमिनरी चैपल में एक सीट से था। बहुत ही स्मार्ट। क्या मुझे शादी करनी चाहिए या अविवाहित रहना चाहिए? खैर, यह एक दिलचस्प सवाल है क्योंकि आप तुरंत बाइबल में जा सकते हैं।

आदर्श बात है विवाह करना। उत्पत्ति में इसके बारे में बताया गया है। नया नियम भी इसके बारे में बताता है।

यह मान लिया गया है। यह तो यहाँ तक मान लेता है कि यहूदी भी यही उम्मीद करते थे कि उनके नेता शादीशुदा होंगे। और चर्च को पादरी के तौर पर शादीशुदा पुरुषों को नियुक्त करना चाहिए और उनके बच्चे होने चाहिए।

यह कोई अनिवार्यता नहीं है। मैं अभी योग्यता सूची में इस बारे में नहीं बताऊंगा। अगर आप शादीशुदा नहीं हैं, आपके बच्चे नहीं हैं, तो इसके लिए आपकी आलोचना नहीं की जा सकती।

लेकिन सच तो यह है कि मुझे लगता है कि हम शादीशुदा और बच्चों वाले लोगों के साथ रहने में थोड़े समझदार हैं क्योंकि उन्हें अपने बच्चों के प्रति अलग-अलग इच्छाओं और आक्रामकता से निपटना पड़ता है। और पति-पत्नी को एक-दूसरे के साथ मिलकर रहना सीखना होगा। और यह एक ऐसा खेल का मैदान है जहाँ लोग चर्च के लोगों के साथ मिलकर रह सकते हैं।

तो, इसमें समझदारी है। बाइबल लोगों को अविवाहित नहीं कहती। यह तो कुरिन्थियों में भी नहीं है।

यह एक बहुत ही गलत इस्तेमाल किया गया पाठ है। जैसा कि पॉल ने कहा, अगर आपके पास उपहार है, तो आपको शादी करने की ज़रूरत नहीं है। लेकिन अगर आप जुनून से जलते हैं, तो आपके पास उपहार नहीं है।

ठीक है? बहुत कम लोगों के पास यह उपहार है। अब, एक नकारात्मक प्रावधान है जहाँ कभी-कभी लोग शादी नहीं करते हैं जो शादी करना चाहते हैं। लेकिन प्रावधान, उनके जीवन में नकारात्मक प्रावधान उन्हें उस दिशा में नहीं ले जाता है, उन्हें उस इच्छा को पूरा करने या भगवान की उनसे जो अपेक्षाएँ हैं उन्हें पूरा करने में मदद नहीं करता है।

खैर, यह एक और सवाल है, है न? ठीक है। तो अब आपको विचार मिल गया होगा, और हम विश्वदृष्टि और मूल्य सेट पर व्याख्यान सात और आठ से आगे बढ़ने जा रहे हैं। और हम घटकों के बारे में बात करने जा रहे हैं।

बाइबिल मॉडल में कुछ ऐसे घटक उभर कर आते हैं। इनमें से कुछ व्याख्यान उतने लंबे नहीं होंगे, जितने आप मेरे साथ पढ़ते आए हैं। हम अपने निर्णयों को संसाधित करने के बारे में भी बात करने जा रहे हैं।

मैं वापस आऊंगा और कई चीजों के बारे में थोड़ा और स्पष्ट हो जाऊंगा। उसके बाद, हम भाग तीन, विवेक पर जाएंगे, जिसमें व्यक्तिपरक चुनौतियों को संबोधित करने की आवश्यकता है। सच कहूँ तो, ये व्याख्यान मेरे कुछ सबसे मजेदार व्याख्यान हैं जो आपको यह समझने में मदद करेंगे कि विवेक क्या है और आपको यह समझने में मदद करेंगे कि बाइबल पवित्र आत्मा के बारे में क्या सिखाती है।

मैं ऐसा करने में सक्षम होने के लिए रोमांचित हूँ, भले ही इसके बारे में बहुत सारे विवाद और मतभेद हैं। तो, हम भाग दो के अंत के करीब आ रहे हैं। विवेक के लिए एक विश्वदृष्टि और मूल्यों के मॉडल की आवश्यकता होती है।

और हम जीवन के व्यक्तिपरक क्षेत्र में आगे बढ़ेंगे, और हमें इसके साथ कैसे जीना है और इससे कैसे निपटना है, और यह उस विश्वदृष्टि और मॉडल के संबंध में हमारे साथ कैसे व्यवहार करता है। तो, आज के लिए आपका धन्यवाद। और आप राहत की सांस ले सकते हैं।

इस बार हम सिर्फ 43 मिनट ही खेल पाए, जो मेरे सामान्य समय से लगभग 20 मिनट कम है, या थोड़ा सा। लेकिन हम आगे बढ़ेंगे। और उम्मीद है कि आप हमारी शुरुआत से ही अंत देखना शुरू कर सकते हैं।

मुझे पता है कि यह थोड़ा धीमा था। बस ऐसा ही होना चाहिए। लेकिन अब हम रबर को सड़क पर आते हुए देख रहे हैं, जैसा कि रूपक और कहावत कहती है।

हम वास्तव में कुछ ऐसी चीजों में शामिल होने जा रहे हैं जो हमें उत्साहित करने वाली हैं। लेकिन अगर आप विभिन्न व्याख्यानों को सुनकर और इस बिंदु तक आकर अपना कर्तव्य नहीं निभाते हैं, तो आप उत्साहित नहीं होंगे। इसलिए अगर आपने ऐसा नहीं किया है, तो वापस जाएं और ऐसा करें क्योंकि यह आपके लिए बहुत फायदेमंद होगा।

धन्यवाद आपका दिन शुभ हो।